रोपण

वर्षा ऋतु के प्रारम्भ में ही सफेद मूसली के पौध भंडार का खेत मे रोपण कर देना चाहिये। रोपण अंतराल 60 से.मी. X 30 से.मी. रखना चाहिये है। रोपित पौधो को पार्श्व छाया (side shade) की आवश्यकता होती हैं। इसके लिये अरहर एक अच्छी पोषक सस्य (nurse crop) हैं। अरहर का बीजारोपण सफेद मूसली के पौधो के बीच के अंतराल मे पूर्व–पश्चिम दिशा मे कतार मे करना चाहिये।

खरपतवार नियंत्रण

खरपतवार निकालने के पूर्व खरपतवार नाशक दवा सिमाजीन (simazene) 2 कि.ग्रा. प्रति हेंक्टेयर अथवा पेंडिमेथालीन (Pendimethaleine) 1 कि.ग्रा. प्रति हेक्टेयर का अनुप्रयोग किया जा सकता है। इसके बाद रोपण के 45 दिन पश्चात हाथ से निदाई करनी चाहिये। इसके पश्चात प्रथम वर्ष में दो बार निदाई तथा गुड़ाई करनी चाहिये। इससे खेत खरपतवार मुक्त रहेगा।

रोग एवं कीट नियंत्रण

सफेद मूसली के रोपण में किसी रोग अथवा कीट का संक्रमण नही देखा गया है।

विदोहन

सफेद मूसली के मूल प्रकंद एक वर्ष मे परिपक्व हो कर विदोहन योग्य हो जाते है। अप्रेल से मई इनका उचित विदोहन काल है। पौधे के मूल प्रकंद को एक कुदाल की मदद से सावधानीपूर्वक बगैर पौधे को क्षति पहुँचाये उखाड़ लेना चाहिये। सामान्यतः मूल प्रकंद मे एक से अधिक जड़े गुच्छे के रूप होती है। इनमे से विक्रय योग्य मोटी जड़ो को काट कर निकाल लेना चाहिये तथा पतली जड़ो को पौधे में लगा रहने देते है और पौधे को पुनः जड़ो सहित मिट्टी में दबा देते है। ये जड़े अगले वर्ष तक विदोहन योग्य हो जाती है।

विदोहनोत्तर प्रबंधन

विदोहित जड़ो को पानी से धो कर मिटटी तथा अन्य अपद्रव्यो को निकाल कर साफ कर लेते है। तत्पश्चात इन्हे छाया मे 15–20 दिन तक सुखाने के बाद साफ बोरों में भरा जाता है।सुरक्षित भंडारण हेतु बोरों को लकड़ी के फट्टो पर रखना चाहिये।

उपज एवं लागत

रोपण के दूसरे वर्ष में प्रति हेक्टेयर 500 से 800 कि. ग्रा. जड़ (शुष्क भार) प्राप्त होती है। रोपण पर प्रति हेक्टेयर लगभग 50 से 60 हजार रूपये लागत आती है।

ई–चरक ऐप

- जड़ी बूटियों, सुगधित औषधियाँ, कच्चे माल एवं इनसे संबंधित जानकारी के लिये ई–चरक (ई–मंच) का उपयोग करे।
- यह ऐप एंड्रोइड मोबाइल, प्ले–स्टोर एवं गूगल पर भी उपलब्ध है।

औषधीय पौधो की कृषि तकनीक, प्राथमिक प्रसंस्करण एवं विपणन संबंधी अधिक जानकारी के लिये संपर्क करे।

क्षेत्रीय संचालक

क्षेत्रीय–सह–सुविधा केन्द्र (मध्यक्षेत्र)

राज्य वन अनुसंधान संस्थान, पोलीपाथर, जबलपुर–482008 (म.प्र.)

संपर्कः 0761–2665540, 9300481678, 9424658622 फैक्सः 0761–2661304

ई–मेलः rcfc_sfri817@rediffmail.com, sdfri@rediffmail.com

वेबः http://www.rcfccentral.org

सफेद मूसली

(*Chlorophytum arundinaceum*)

क्षेत्रीय-सह-सुविधा केन्द्र, मध्य क्षेत्र

राष्ट्रीय औषधीय पादप बोर्ड

आयुर्वेद, योग एवं प्राकृतिक चिकित्सा, यूनानी, सिद्धा और होम्योपैथी (आयुष) मंत्रालय, भारत सरकार

2019

सफेद मूसली

(*Chlorophytum arundinaceum*)

आयुवेदिक नाम	:	मूसली भेद
हिन्दी नाम	:	सफेद मूसली
यूनानी नाम	:	मूसली सफेद, बिषकंदरी
व्यापारिक नाम	:	**Indian Spider Plant**
वैज्ञानिक नाम	:	***Chlorophytum arundinaceum***
उपयोगी भाग	:	कंदिल जड़

सामान्य परिचय

सफेद मूसली लिलीयेसी (Liliaceae) कुल का बहुवर्षीय शाकीय पादप है। आयुर्वेद में इसे मूसलीभेद तथा यूनानी मे बिषकंदरी भी कहा जाता है। इसका अंग्रेजी नाम Indian spider plant है।

वितरण

यह पौधा पूर्वी भारत मे तथा मुख्य रूप से बंगाल, सिक्किम, बिहार, झारखंड, असम, मेघालय तथा ओडिसा राज्यो मे छितरे रूप मे पाया जाता है। मध्य भारत मे मध्यप्रदेश एवं छत्तीसगढ़ राज्यो के वनो मे भी कही.कही यह पौधा पाया जाता है।

आकारिकी

इस पौधे की जड़े छोटी परन्तु कठोर होती हैं। ये जड़े प्रायः मोटी, गूदेदार एवं बेलनाकार होती है। पत्तियॉ 15 से 35 से.मी. लंम्बी एवं तिरछी भालेनुमा आकार की होती हैं। देश में अब यह प्रजाति लुप्तप्राय मानी जाती है।

पुष्पीय अभिलक्षण

इस प्रजाति में पुष्पक्रम (inflorescence) घना होता है। पुष्प एक गुच्छे के रूप मे व्यवस्थित होते है एवं यह गुच्छा शीघ्र शाखाओ मे विभक्त हो जाता है। पुष्प श्वेत रंग के होते है। परागकोष (anther) पीत वर्ण के होते है तथा ये परागकोषधारी तंतुओ (filaments) के बराबर अथवा उनसे भी लंबे हो सकते हैं। सहपत्र (bracts) सामान्यतया लंबे होते है तथा ये छोटे डंठल वाली कलिकाओ (buds) से जुड़े होते है। फल गोलाकार कैप्सूल होते है तथा फल के प्रकोष्ठो (cells) मे 3–4 कृष्ण वर्ण के बीज होते हैं।

उपयोगी भाग : प्रकंदीय मूल (tuberous root)

रासायनिक संगठन

सफेद मूसली की जड़ो मे सेपोजेनिन स्टेरॉइड पाया जाता हैं। इसके अलावा इनमे स्टार्च तथा अन्य कार्बोहाइड्रेट्स, शर्करा, मैग्नीशियम तथा पोटेशियम जैसे खनिज भी प्रचुर मात्रा मे रहते है। साथ ही इसमे टैनिन भी पाया जाता है।

चिकित्सीय उपयोग

औषधीय गुण युक्त सफेद मूसली के प्रकन्दो का उपयोग सामान्य शक्तिवर्धक के रूप मे होता है। इसमे सेपोजेनिन स्टेराइड के अलावा भरपूर प्रोटीन, कार्बोहाइड्रेट्स तथा केल्शियम भी होता है। कंद मे उच्च कामोद्दीपक गुण होता है। यह गुर्दे की पथरी, ल्युकोमिया तथा मधुमेय में भी उपयोगी है।

प्रवर्धन सामग्री : बीज अथवा मूल प्रकंद

कृषि तकनीक

नर्सरी तकनीक

सफेद मूसली के लिये पौध भंडार बीजू पौधा अथवा जड़ भंडार से तैयार किया जा सकता है। अनुपचारित बीजों का अंकुरण प्रतिशत काफी कम (लगभग 9–12%) होता है। परंतु सांद्र गंधकाम्ल से आधे घण्टे तक उपचारण के पश्चात जिबरेलिक एसिड (GA) के 100 ppm घोल मे उपचारण से बीजों का अंकुरण 38% हो जाता है।

नर्सरी मे उठी हुई (raised) क्यारिर्यो मे सफेद मूसली का बीज मार्च माह मे 10 से.मी. अंतराल पर पंक्तियों मे बोना चाहिए। गर्मी के मौसम में बारम्बार सिंचाई आवश्यक है। मई–जून तक पौधे प्रतिरोपण योग्य हो जाते है।

यदि अकेले सफेद मूसली की ही खेती करनी हो, तो प्रति हेक्टेयर 45–50 हजार पौधो के पौध भंडार की आवश्यकता होगी। परन्तु एकाकी रोपण की तुलना मे अरहर के साथ इसका अंतरासस्यन (inter cropping) बेहतर परिणाम देता हैं क्योकि अरहर की फसल से प्राप्त होने वाले आर्थिक लाभ के साथ–साथ अरहर के पौधे सफेद मूसली के पौधो को आावश्यक छाया भी प्रदान करते है। अंतरासस्यन की स्थिति मे प्रति हेक्टेयर 30 से 40 हजार सफेद मूसली के पौध भंडार की ही आवश्यकता होगी।

यदि बीजू पौध की बजाय जड़ भंडार से सफेद मूसली का पौध भंडार तैयार किया जाना है तो प्रति हेक्टेयर रोपण हेतु 7–10 क्विटंल जड़ भंडार की आवश्यकता होगी। जड़ भंडार से तैयार पौधो की रोपण सफलता बीजू पौधो की तुलना मे अधिक होती है तथा नर्सरी व्यय भी बढ़ जाता है।

क्षेत्र तैयारी एवं उर्वरक अनुप्रयोग

सफेद मूसली के रोपण के पूर्व क्षेत्र तैयारी आवश्यक हैं। इसके लिये खेत की भलीभॉति जुताई के पश्चात उस पर दो–तीन बार पाटा चला देना चाहिये ताकि मिट्टी के ढेले फूटकर मिट्टी भुरभुरी हो जाये। क्षेत्र तैयारी के समय ही मिट्टी मे प्रति हेक्टेयर 20 टन गोबर खाद या अन्य जैविक खाद मिला देनी चाहिए। रासायनिक उर्वरक NPK की 90:30:30 कि.ग्रा. प्रति हेक्टेयर मात्रा भी दी जाने की अनुशंसा की गई है। इनमे से नाइट्रोजन (N) तीन बार में दी जाये। नाइट्रोजन (N), फासफोरस (P) तथा पोटाश (K) की एक साथ 30:30:30 कि.ग्रा. मात्रा प्रति हेक्टेयर क्षेत्र तैयारी के समय ही दी जा सकती है। नाइट्रोजन की दूसरी खुराक 30 कि. ग्रा. प्रति हेक्टेयर रोपण के 3 माह पश्चात तथा तीसरी खुराक 30 कि.ग्रा.प्रति हेक्टेयर रोपण के 6 माह पश्चात दी जाये।

मृदा उपचार

कई बार मृदा मे लोहे के तत्व की कमी से रोपण की वृद्धि दर प्रभावित होती है। अतः रोपण के पूर्व मृदा परीक्षण करा लेना चाहिये तथा तदनुसार मृदा उपचार करना चाहिये।